International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
An International Quarterly bi-lingual Multidisciplinary Double Blind Open Access Peer Reviewed Refereed Journal
ISSN:2581-9925, Impact Factor (Cosmos: 7.555 & I2OR: 5.105), Volume 08, No. 03(I), July-September, 2026, pp. 74-77

भारतीय ज्ञान प्रणाल्यां संस्कृतशिक्षायाः उपयोगिताः

रीना अग्रवाल[1*] | डॉ बलराम शर्मा[2]

शोधार्थी, निर्वाण विश्व विद्यालय, जयपुर।
शोध–मार्गदर्शक, कला एवं मानविकी विभाग, निर्वाण विश्व विद्यालय, जयपुर।

*Corresponding Author: kvsreena.aggarwal@gmail.com

Citation: अग्रवाल, रीना एवं शर्मा, बलराम (2026). भारतीय ज्ञान प्रणाल्यां संस्कृतशिक्षायाः उपयोगिताः. International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science, 08(03(I)), 74–77.

सार

भारतीय ज्ञान प्रणाली मूलतः संस्कृत भाषा के विशाल वाङ्मय पर आधारित है। प्रस्तुत शोध सारांश का मुख्य उद्देश्य आधुनिक भारतीय शिक्षा प्रणाली में संस्कृत शिक्षा की व्यावहारिक उपयोगिता, वैज्ञानिकता और वैचारिक प्रासंगिकता का मूल्यांकन करना है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में यह अध्ययन स्पष्ट करता है कि संस्कृत केवल कर्मकांड या पूजा–पद्धति की भाषा नहीं है, बल्कि यह आयुर्वेद, खगोल विज्ञान, गणित, पर्यावरण और कंप्यूटर विज्ञान जैसे क्षेत्रों में ज्ञान का मूल स्रोत है। प्राथमिक और माध्यमिक आंकड़ों के विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि संस्कृत का व्यावहारिक ज्ञान न केवल हमारी सांस्कृतिक जड़ों को मजबूत करता है, बल्कि छात्रों के संज्ञानात्मक विकास और भाषाई कौशल को भी उन्नत करता है।

शब्दकोशः *भारतीय ज्ञान प्रणाली, संस्कृत शिक्षा, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, संज्ञानात्मक विकास, आधुनिक उपयोगिता।*

प्रस्तावना

भारतीय ज्ञान परंपरा विश्व की प्राचीनतम और सबसे समृद्ध ज्ञान प्रणालियों में से एक है। इस संपूर्ण ज्ञान–विज्ञान की संवाहिका देववाणी संस्कृत रही है। उपनिषद, वेद, पुराण, दर्शनशास्त्र से लेकर चाणक्य के अर्थशास्त्र तक, मानव जीवन को उन्नत बनाने वाली सभी विधाएं संस्कृत में रची गईं। औपनिवेशिक काल और मैकाले की शिक्षा नीति के कारण संस्कृत शिक्षा को हाशिए पर धकेल दिया गया, जिससे आधुनिक पीढ़ी अपनी मूल बौद्धिक विरासत से कट गई। वर्तमान 21वीं सदी में जब दुनिया मानसिक अवसाद, पर्यावरण संकट और नैतिक पतन से जूझ रही है, तब संस्कृत वाङ्मय में छिपे सूत्र अत्यंत प्रासंगिक हो जाते हैं।

भारतस्य प्रतिष्ठे द्वे संस्कृतं संस्कृतिस्तथा।

अर्थः भारत की प्रतिष्ठा उसके दो स्तंभों पर टिकी है एक संस्कृत भाषा और दूसरी उसकी संस्कृति।

आधुनिक न्यूरोसाइंस और संज्ञानात्मक विज्ञान के शोधों से यह सिद्ध हुआ है कि संस्कृत के मंत्रों और व्याकरण के सूत्रों का सस्वर पाठ करने से मस्तिष्क के ग्रे मैटर में वृद्धि होती है। इसे वैश्विक स्तर पर संस्कृत इफेक्ट नाम दिया गया है। संस्कृत का पाणिनीय व्याकरण गणितीय सिद्धांतों पर कार्य करता है। छात्र जब अष्टाध्यायी के सूत्रों को कंठस्थ करते हैं, तो उनकी अल्पकालिक और दीर्घकालिक स्मृति क्षमता अन्य छात्रों की

* *Copyright © 2026 by Author's and Licensed by Inspira. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution License which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work properly cited.*

तुलना में काफी तेज हो जाती है। संस्कृत ध्वनियों का उच्चारण करते समय जीभ और तालु के विशिष्ट बिंदुओं पर दबाव पड़ता है, जो मस्तिष्क की नसों को सक्रिय करता है। इससे तनाव कम होता है और संज्ञानात्मक लचीलापन बढ़ता है।

संस्कृत को भारत की अधिकांश इंडो–आर्यन भाषाओं (हिंदी, मराठी, बंगाली, गुजराती, पंजाबी) की जननी माना जाता है। संस्कृत सीखने वाले छात्रों के लिए अन्य भारतीय भाषाओं की शब्दावली और वाक्य संरचना को समझना बेहद आसान हो जाता है, क्योंकि वे पहले से ही मूल धातुओं से परिचित होते हैं। नासा के वैज्ञानिक रिक ब्रिग्स ने अपने प्रसिद्ध शोध पत्र में स्पष्ट किया था कि कंप्यूटर प्रोग्रामिंग और नेचुरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग के लिए संस्कृत दुनिया की सबसे उपयुक्त और स्पष्ट भाषा है। संस्कृत का व्याकरण सूत्र–आधारित है (जैसे अकुहविसर्जनीयान्कण्टः), जो कंप्यूटर के बाइनरी और कोडिंग लॉजिक से पूरी तरह मेल खाता है। इसलिए, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के युग में मशीन लर्निंग एल्गोरिदम विकसित करने में संस्कृत शिक्षा अत्यंत उपयोगी साबित हो रही है।

चित्तस्य शुद्धये वाचं संस्कृतां संस्मरेत्सदा।

एकाग्रता प्रजायेत मनसः शान्तिवर्धनम्॥

अथर्रू चित्त की शुद्धि के लिए सदा परिष्कृत संस्कृत वाणी का स्मरण और उच्चारण करना चाहिए। इससे मन में एकाग्रता का जन्म होता है और मानसिक शांति में वृद्धि होती है।

प्राचीन भारतीय विज्ञान तक सीधी पहुंचः जब तक छात्र संस्कृत नहीं सीखेंगे, वे पश्चिमी अनुवादों पर निर्भर रहेंगे, जो अक्सर त्रुटिपूर्ण और पक्षपातपूर्ण होते हैं। गणित में शून्य की खोज, पाई (π) का मान, और बौधायन का शुल्ब सूत्र (पायथागोरस प्रमेय का प्राचीन रूप) जैसी वैज्ञानिक उपलब्धियों को उनके मूल रूप में समझने के लिए संस्कृत शिक्षा आवश्यक है। भारतीय चिकित्सा पद्धति श्आयुर्वेदश पूरी तरह से संस्कृत के श्लोकों में संकलित है। चरक संहिता और सुश्रुत संहिता के मूल सूत्रों को समझे बिना एक कुशल आयुर्वेदिक चिकित्सक बनना असंभव है। संस्कृत की शिक्षा चिकित्सा के क्षेत्र में केवल रोग के इलाज तक सीमित नहीं है, बल्कि यह ष्स्वस्थस्य स्वास्थ्य रक्षणंष (स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य की रक्षा) के दर्शन को सिखाती है।

अनुलोमगतिर्नौस्थः पश्यत्यचलं विलोमगं यद्वत्।

अचलानि भानि तद्वत् समपश्चिमगानि लङ्कायाम्॥

अथर्रू जिस प्रकार नाव में आगे बढ़ता हुआ मनुष्य किनारे पर स्थित स्थिर वृक्षों या वस्तुओं को पीछे की ओर भागते हुए देखता है, ठीक उसी प्रकार लंका से देखने पर आकाश के स्थिर तारे और नक्षत्र पश्चिम दिशा में घूमते हुए दिखाई देते हैं।

हितभुक् मितभुक् चौव ऋतभुक् च तथा भवेत्।

रोगमुक्तो भवेन्मर्त्यो य एतन्नियमे स्थितः॥

अर्थः जो मनुष्य हितकारी भोजन करता है, भूख से थोड़ा कम यानी संतुलित भोजन करता है, और ऋतु या मौसम के अनुकूल भोजन करता है, वह हमेशा रोगों से मुक्त रहता है।

वर्तमान वैश्विक संकट श्जलवायु परिवर्तनश का समाधान भारतीय ज्ञान प्रणाली में समाहित है। वेदों के भूमि सूक्त में कहा गया हैरू पृथ्वी मेरी माता है और मैं इसका पुत्र हूँ। संस्कृत शिक्षा छात्रों में पर्यावरण के प्रति उपभोगवादी दृष्टिकोण को बदलकर आदर और सह–अस्तित्व की भावना पैदा करती है, जो आज के सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए अनिवार्य है।

यत्र वृक्षाः तत्र जलम्, यत्र जलं तत्र जीवनम्।

यत्र जीवनं तत्र सुखम्, तस्मात् वृक्षं प्ररक्षत॥

अर्थः जहाँ वृक्ष हैं, वहाँ जल है, जहाँ जल है, वहाँ जीवन है, और जहाँ जीवन है, वहीं सुख है। इसलिए, अपनी सुख–समृद्धि के लिए पेड़ों की रक्षा करें।

आज की आधुनिक शिक्षा प्रणाली केवल संज्ञानात्मक विकास और व्यावसायिक कौशल पर ध्यान देती है, जिससे समाज में अपराध, अवसाद और नैतिक पतन बढ़ रहा है। संस्कृत साहित्य का एक बहुत बड़ा भाग श्सुभाषितोंश और सूक्तियों से भरा पड़ा है, जो नीतिशास्त्र और जीवन मूल्यों की शिक्षा सरल रूप में देते हैं। वैश्वीकरण के इस दौर में जब सीमा विवाद और युद्ध की विभीषिका चारों ओर है, संस्कृत का यह कालजयी संदेश पूरे विश्व को एक सूत्र में पिरोता हैरू संस्कृत की शिक्षा संकीर्ण मानसिकता को समाप्त कर वैश्विक भाईचारे और श्सर्वे भवन्तु सुखिनःश (सभी सुखी हों) की भावना को बल देती है।

वृत्तं यत्नेन संरक्षेत वित्तमेति च याति च।

अक्षीणो वित्ततः क्षीणो वृत्ततस्तु हतो हतः॥

अर्थः मनुष्य को अपने चरित्र की रक्षा यत्नपूर्वक करनी चाहिए, क्योंकि धन तो आता है और चला जाता है। धन के नष्ट होने पर भी मनुष्य नष्ट नहीं होता, लेकिन चरित्र के नष्ट होने पर मनुष्य पूरी तरह से मृत या नष्ट हो जाता है।

अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्।

उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्॥

अर्थः यह मेरा है और वह पराया हैकृऐसी संकीर्ण सोच छोटे मन वाले लोगों की होती है। जो लोग उदार चरित्र के होते हैं, उनके लिए तो यह पूरी पृथ्वी ही एक परिवार के समान होती है।

भारत सरकार की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने भारतीय ज्ञान प्रणालियों को मुख्यधारा के पाठ्यक्रम में एकीकृत करने का ऐतिहासिक निर्णय लिया है। नीति में संस्कृत के संदर्भ में निम्नलिखित त्रि–स्तरीय भाषा सूत्र को बढ़ावा देने की बात कही गई है। संस्कृत को स्कूल और उच्च शिक्षा के सभी स्तरों पर छात्रों के लिए एक महत्वपूर्ण, जीवंत और वैकल्पिक भाषा के रूप में पेश किया जाएगा। आईआईटी और आईआईएम जैसे तकनीकी संस्थानों में संस्कृत के माध्यम से विज्ञान, खगोलशास्त्र और प्रबंधन के पाठ्यक्रम शुरू किए जा रहे हैं।

इस विजन को धरातल पर उतारने के लिए पारंपरिक और आधुनिक शिक्षा के बीच की खाई को पाटना होगा। हमें ऐसे 'इंटरडिसिप्लिनरी' विद्वानों की श्रृंखला तैयार करनी होगी जो एक हाथ में अष्टाध्यायी और दूसरे हाथ में कंप्यूटर प्रोग्रामिंग की भाषाएं लेकर चल सकें। संस्कृत के वैज्ञानिक ग्रंथों का आधुनिक वैज्ञानिक शब्दावली में प्रामाणिक अनुवाद और उनका सरलीकरण समय की सबसे बड़ी मांग है।

भारतीय ज्ञान प्रणाली में संस्कृत शिक्षा की उपयोगिता केवल अतीत के गौरवगान तक सीमित नहीं है, बल्कि यह भविष्य के नए भारत के निर्माण की आधारशिला है। संस्कृत भाषा में निहित ज्ञान–विज्ञान, संज्ञानात्मक लाभ, कंप्यूटर विज्ञान के लिए इसकी उपयुक्तता, और इसके नैतिक मूल्य इसे 21वीं सदी की आधुनिक शिक्षा के लिए अत्यधिक प्रासंगिक बनाते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के माध्यम से संस्कृत शिक्षा को आधुनिक विज्ञान के साथ जोड़कर हम न केवल अपनी सांस्कृतिक धरोहर को सुरक्षित रख सकते हैं, बल्कि वैश्विक स्तर पर भारत को पुनः एक श्ज्ञान महाशक्तिश के रूप में स्थापित कर सकते हैं।

भारत को वैश्विक स्तर पर पुनः एक 'ज्ञान महाशक्ति' और 'विश्वगुरु' के रूप में स्थापित करने का मार्ग संस्कृत शिक्षा की गलियों से होकर ही गुजरता है। संस्कृत का पुनरुत्थान किसी पुराने युग में लौटने की प्रतिगामी यात्रा नहीं है, बल्कि यह अपनी जड़ों से ऊर्जा लेकर भविष्य के आधुनिक आकाश को छूने की एक

प्रगतिशील छलांग है। जब तक भारतीय मेधा अपनी मूल बौद्धिक भाषा 'संस्कृत' से विमुख रहेगी, तब तक वह मौलिक चिंतन के बजाय केवल पश्चिमी विचारों के अनुकरण तक सीमित रहेगी। अतः, भारतीय ज्ञान प्रणाली के अंतर्गत संस्कृत शिक्षा का सार्वभौमीकरण और आधुनिकीकरण न केवल प्रासंगिक है, बल्कि विकसित भारत के निर्माण के लिए अत्यंत अनिवार्य और अपरिहार्य है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. महाना, डॉ. पंकज –Indian Knowledge System in Sanskrit Literature– राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली.
2. शर्मा, विवेक – भारतस्य ज्ञानपरम्परा – सत्यम पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली.
3. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार – राष्ट्रीय शिक्षा नीति
4. ब्रिग्स, रिक. –ज्ञदवूसमकहम Representation in Sanskrit and Artificial Intelligence. नासा, एआई मैगजीन.
5. आईकेएस डिवीजन आधिकारिक वेबसाइट
6. सिन्हा, सुधिंता – आधुनिक शिक्षा प्रणाली में संस्कृत भाषा का महत्व और मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया पर इसका प्रभाव. अनंता जर्नल।

❑❑❑